एक मुकाबला

सेरिब्रल पॉल्सी

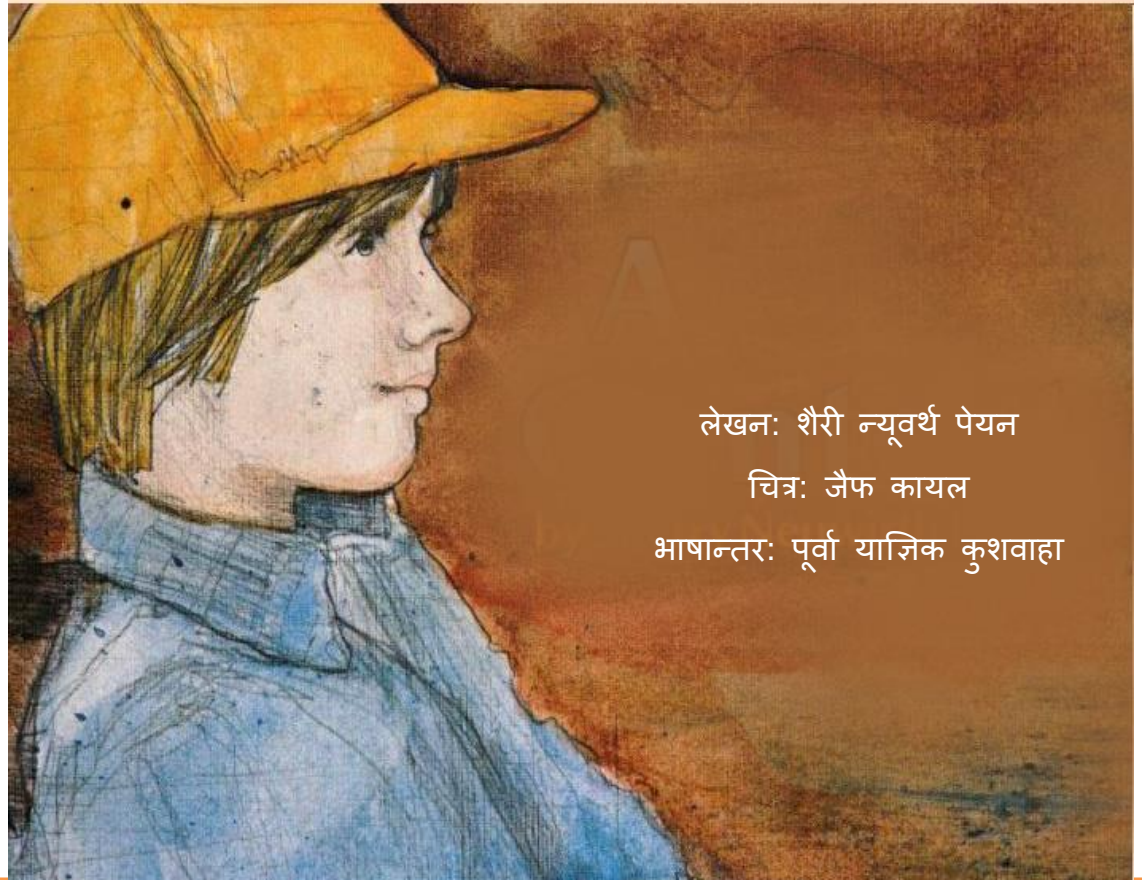

लेखन: शैरी न्यूवर्थ पेयन

चित्र: जैफ कायल

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

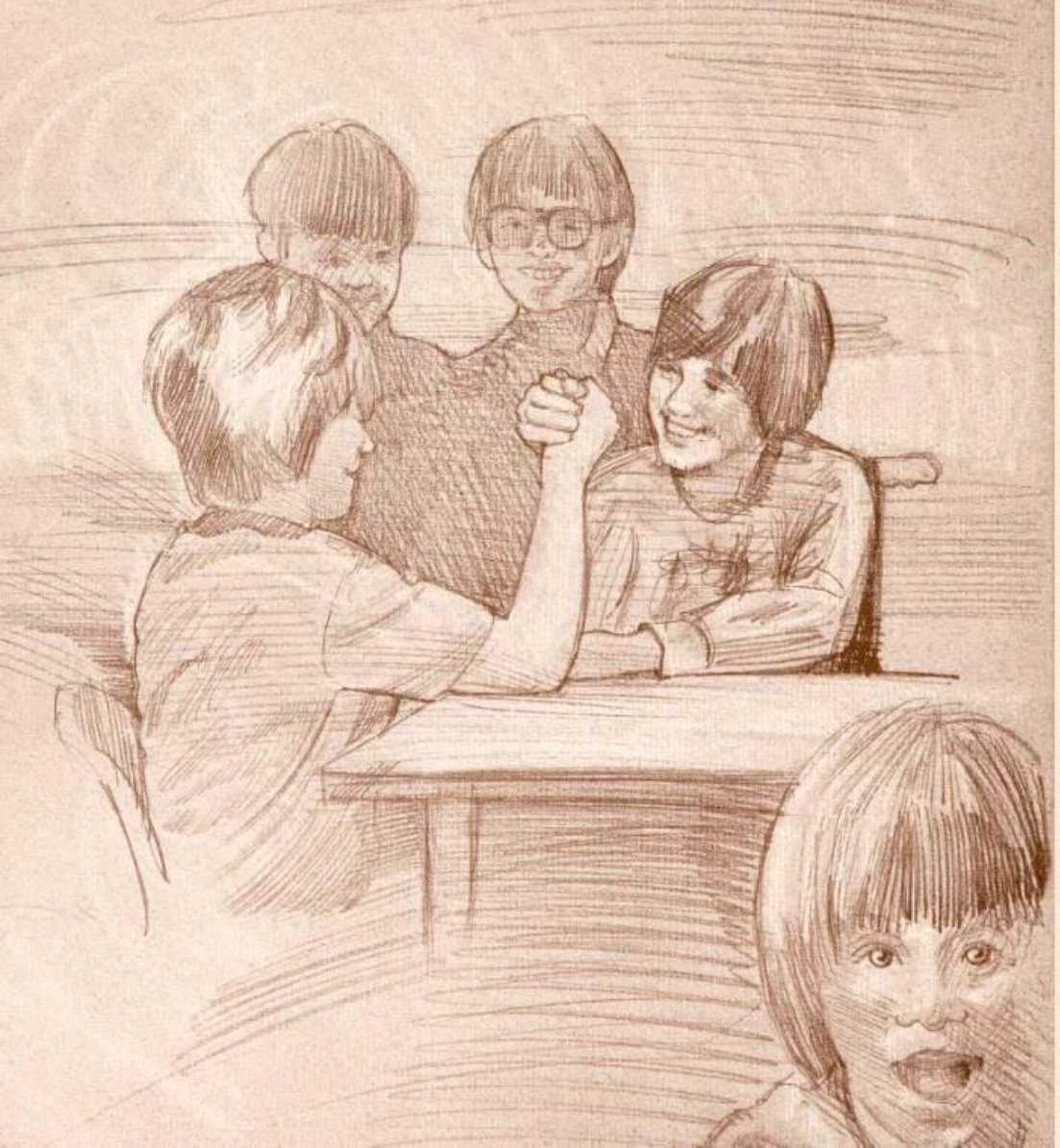

एक मुकाबला

सेरिब्रल पॉल्सी

लेखन: शैरी न्यूवर्थ पेयन

चित्र: जैफ कायल

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

माइक दस बरस का है। वह अब पाँचवी जमात में आ चुका है। वह एक खास स्कूल में जाता था जिसमें उसके सारे दोस्तों के पास या तो बैसाखियाँ थीं, या फिर माइक की तरह पहिएदार-कुर्सियाँ। उस स्कूल में माइक हर दिन तैरता था ताकि उसकी माँसपेशियाँ मज़बूत बनें। वह और उसके दोस्त पहिएदार-कुर्सियों पर बैठे कई मज़ेदार खेल भी करते थे। कभी वे तब तक पीछे झुकते जब तक उनकी कुर्सियाँ सिर्फ पिछले पहियों पर न टिक जाएं। और तब वे कुर्सियों को गोल-गोल घुमाते। माइक ऐसा करने में माहिर था। वे अपनी पहिएदार-कुर्सियों से रीले रेस भी करते। माइक को रेस लगाना और खेलना बेहद पसन्द है।

माइक को जो नापसन्द है, वह है लोगों का उसे घूरना। दरअसल कई लोगों ने ऐसे बच्चों को देखा ही नहीं होता जिन्हें सेरिब्रल पॉल्सी (दिमाग का पक्षाघात) हो। माइक यह जानता है। फिर भी उसे घूरे जाना अच्छा नहीं लगता।

माइक को जिस तरह की सेरिब्रल पॉल्सी है उसे हिमोप्लेजिया कहते हैं। मतलब कि उसके पैर काम नहीं करते। उसके दिमाग का जो हिस्सा पैरों को नियंत्रित करता है, वह उसके पैदा होते समय चोटिल हो गया। जब माइक छह बरस का हुआ तब उसके पैरों का ऑपरेशन हुआ। यही तरीका था उन्हें सीधा करने का। पर उसे तब से पैरों पर ब्रेसेस् पहनने पड़ते हैं, ताकि वे तने रहें। कभी-कभी उसके पैरों की माँसपेशियाँ झटके से सिकुडती हैं। इससे उसका पैर अचानक उछल-सा जाता है। क्योंकि माइक का अपने पैरों पर कोई नियंत्रण है ही नहीं उसे हमेशा पहिएदार-कुर्सी इस्तमाल करनी होगी।

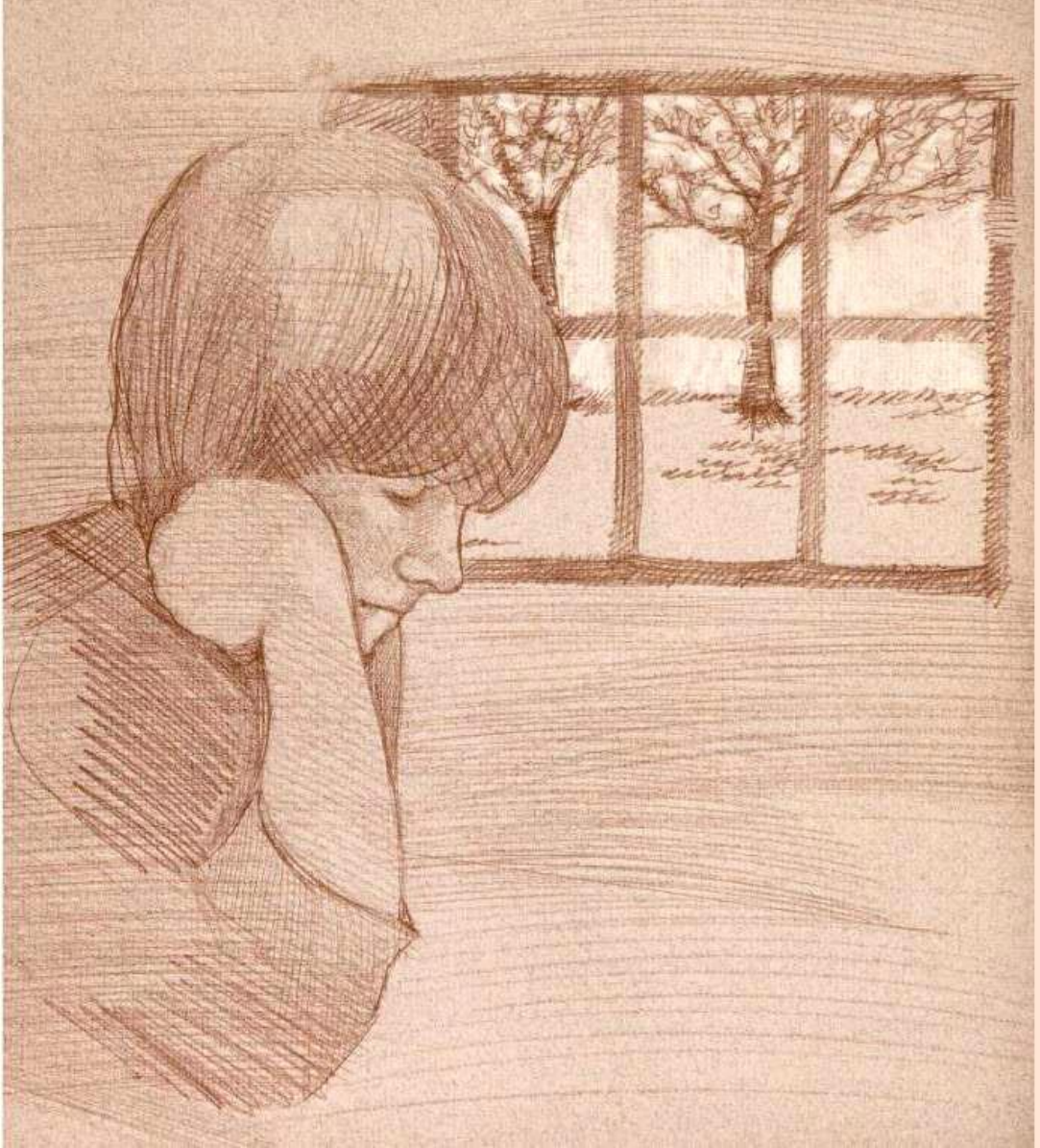

माइक को अपने नए स्कूल में कुछ चीज़ों में मदद की ज़रूरत है। वहाँ कैफेटेरिया में दूध के डब्बे इतने ऊपर रखे होते हैं कि वह कुर्सी पर बैठे उन्हें उतार नहीं सकता। क्योंकि ऐसा करने पर गोद में रखी ट्रे गिर सकती है। इसी तरह बाथरूम के सारे दरवाज़े खोलने में उसे मदद चाहिए होती है। पर शुरुआत में उसे मदद मांगने में झिझक होती है। उसे लगता है जैसे सब उसे घूर रहे हैं।

स्कूल के पहले दिन रैन्डी नाम के लड़के ने माइक की नारंगी बेसबॉल टोपी झपटी और यह चीखते भाग खड़ा हुआ "स्पैज़ (अपाहिज) की टोपी मेरे पास है।" माइक को उस पल नए स्कूल से नफरत हो गई।

जब माइक ने अपने पिता को वाक़या सुनाया, वे बोले, "बेटा यह आसान नहीं है, है ना ? पर तुम्हें हर किस्म के लोगों के साथ जीना होगा। सो इस बारे में जानने-सीखने की शुरुआत करने के लिए स्कूल अच्छी जगह।"

माइक ने पिता से कहा कि वह स्कूल जाएगा। पर स्कूल उसे पसन्द तो नहीं आएगा।

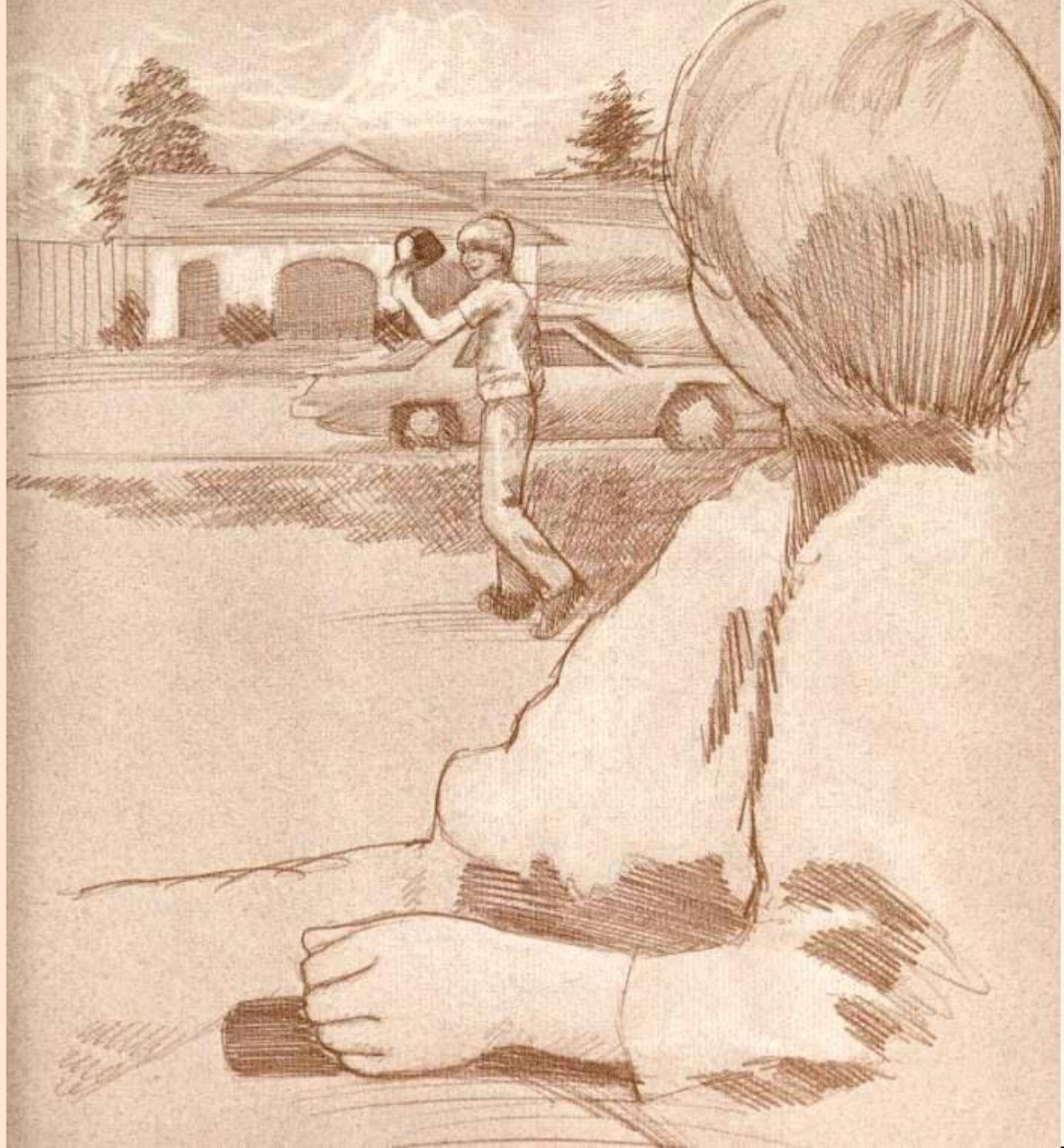

माइक के पिछले स्कूल में शिक्षक धीरे-धीरे आगे बढ़ते थे क्योंकि छात्रों को देखने, सुनने या लिखने में दिक्कत होती थी। पर नए स्कूल में पढ़ाई कठिन है। पर माइक को इससे कोई परेशानी नहीं होती। उसे अच्छे अंक मिलते हैं।

नए स्कूल के पास ही एक युवा केन्द्र है। उसमें पहिएदार कुर्सी के लिए ढ़लुआँ रैम्प बना हुआ है। अन्दर एक बड़ा खेल कक्ष है। उसमें पूल टेबल है। स्कूल के बाद उसकी कक्षा के कई बच्चे वहाँ पूल खेलने जाते हैं। माइक भी पूल खेलना चाहता है। अगर कोई उसे कुर्सी से उठने में मदद करे तो वह खुद को पूल टेबल के सहारे टिका सकता है। और तब क्यू स्टिक का इस्तमाल कर सकता है। माइक घर में लगभग हर रोज़ अपने पिता के साथ पूल खेलता है। पर दूसरे बच्चे ऐसा बरताव करते हैं मानो वह हौव्वा हो, वे उससे डरते लगते हैं।

सो माइक खेल कक्ष की दहलीज पर बैठे देखता रहता है। शायद कुछ समय गुज़रने के बाद उसका परिचय उन बच्चों से हो जाएगा जो पूल खेलना पसन्द करते हैं। शायद वे तब उसकी मदद करें। पर तब तक वह उनको खेलते देखेगा। और वह उन्हें बेसबॉल खेलते देखेगा। उन्हें अपने दोस्तों के साथ खेल मैदान में दौड़ते, खिलखिलाते देखेगा।

पर एक दिन स्कूल से लौटने के बाद माइक रो पड़ा। "सब बहुत ही ख़राब हैं माँ। मुझसे कोई बात तक नहीं करता। मुझे कोई पसन्द नहीं करता।"

माँ ने उसे गले लगाया। "ओह माइक! सच ऐसे में मुझे भी रोना आता," उसने कहा।

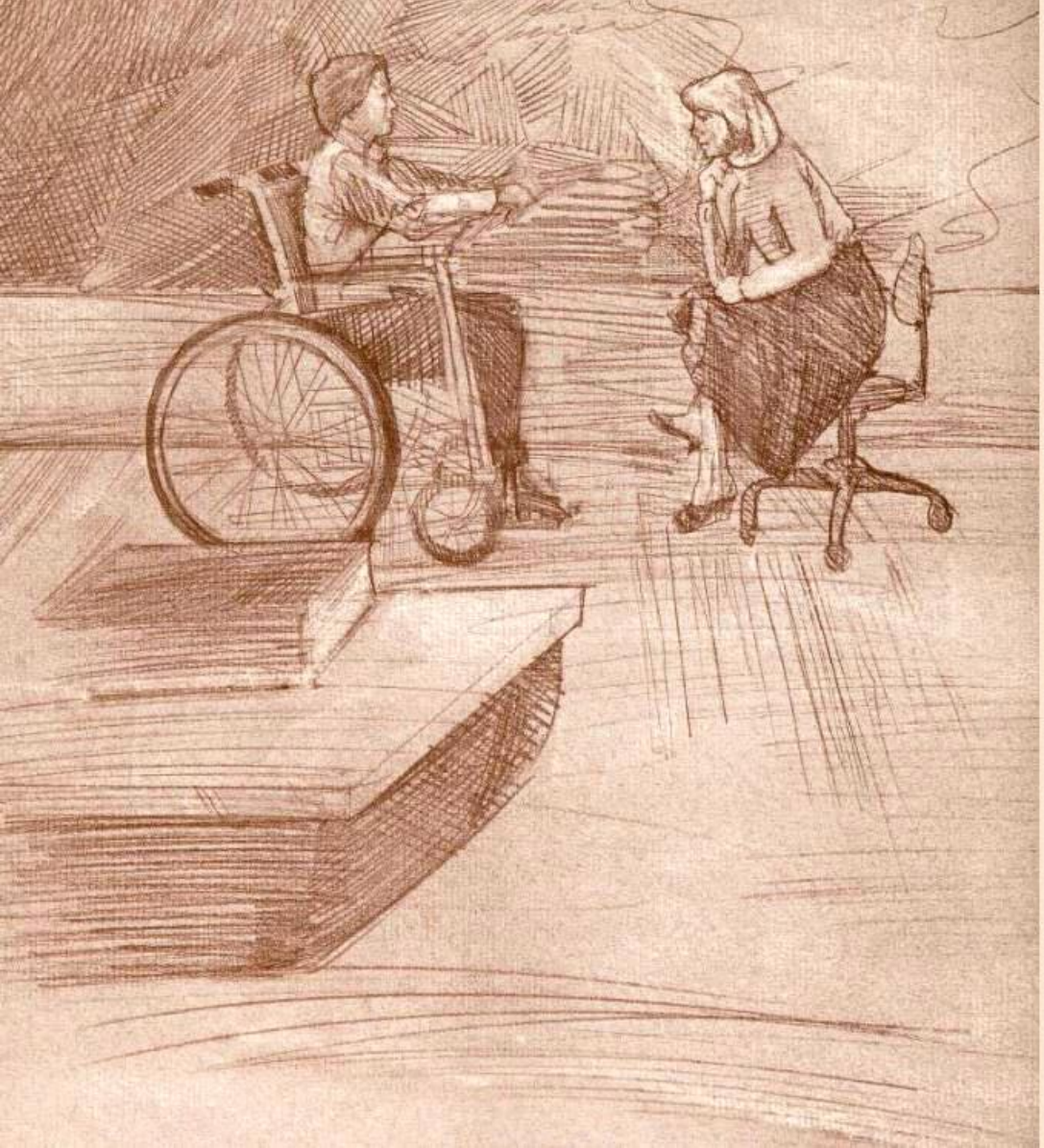

माइक की शिक्षिका ने उसके उदास चेहरे पर ग़ौर किया होगा। क्योंकि एक दिन उन्होंने माइक से स्कूल के बाद रुकने को कहा।

"माइक," वे बोलीं, "तुम्हें यह स्कूल खास पसन्द नहीं आ रहा है, है ना?"

"जी मिसेज़ कॉख़र," माइक ने जवाब दिया। "इस पूरे स्कूल में मैं अकेला पहिएदार-कुर्सी पर बैठा बच्चा हूँ। मुझे लगता है कि मैं सबसे अलग हूँ।"

"ज़रूर लगता होगा," मिसेज कॉख़र बोलीं। "हमें दूसरे बच्चों को यह जता देना है कि तुम उनसे इतने भी अलग नहीं हो। मुझे कुछ सूझ रहा है। यह बताओ कि तुम किस चीज़ में बहुत अच्छे हो।"

"मैं चैकर्स अच्छे से खेल सकता हूँ," माइक ने बताया। मैं लगभग हर रात अपने पिता के साथ पूल खेलता हूँ। और मैं पंजा लड़ाने में माहिर हूँ।"

"पंजा लड़ाने में?" मिसेज कॉखर ने कहा। "इससे बात बन सकती है। हम एक मुकाबला करवा सकते हैं। पर कक्षा में कई बच्चे अच्छे खासे ताकतवर हैं। खास तौर से रैन्डी।"

"मुझे भरोसा है कि मैं जीत सकता हूँ, बशर्ते आप मौका दें।"

"चलो पहले मुझ से ही पंजा लड़ाओ," मिसेज़ कॉख़र ने कहा। "देखें तुम मुझे हरा सकते हो या नहीं।"

मिसेज़ कॉखर की बाज़ू को मेज़ पर पलट देने में माइक को ज़्यादा वक्त नहीं लगा। उन्हें कुछ अचरज हुआ। उन्होंने माइक को आँख मारी। "तो पंजा लड़ाने का मुकाबल ही सही," वे मुस्कुरा कर बोलीं।

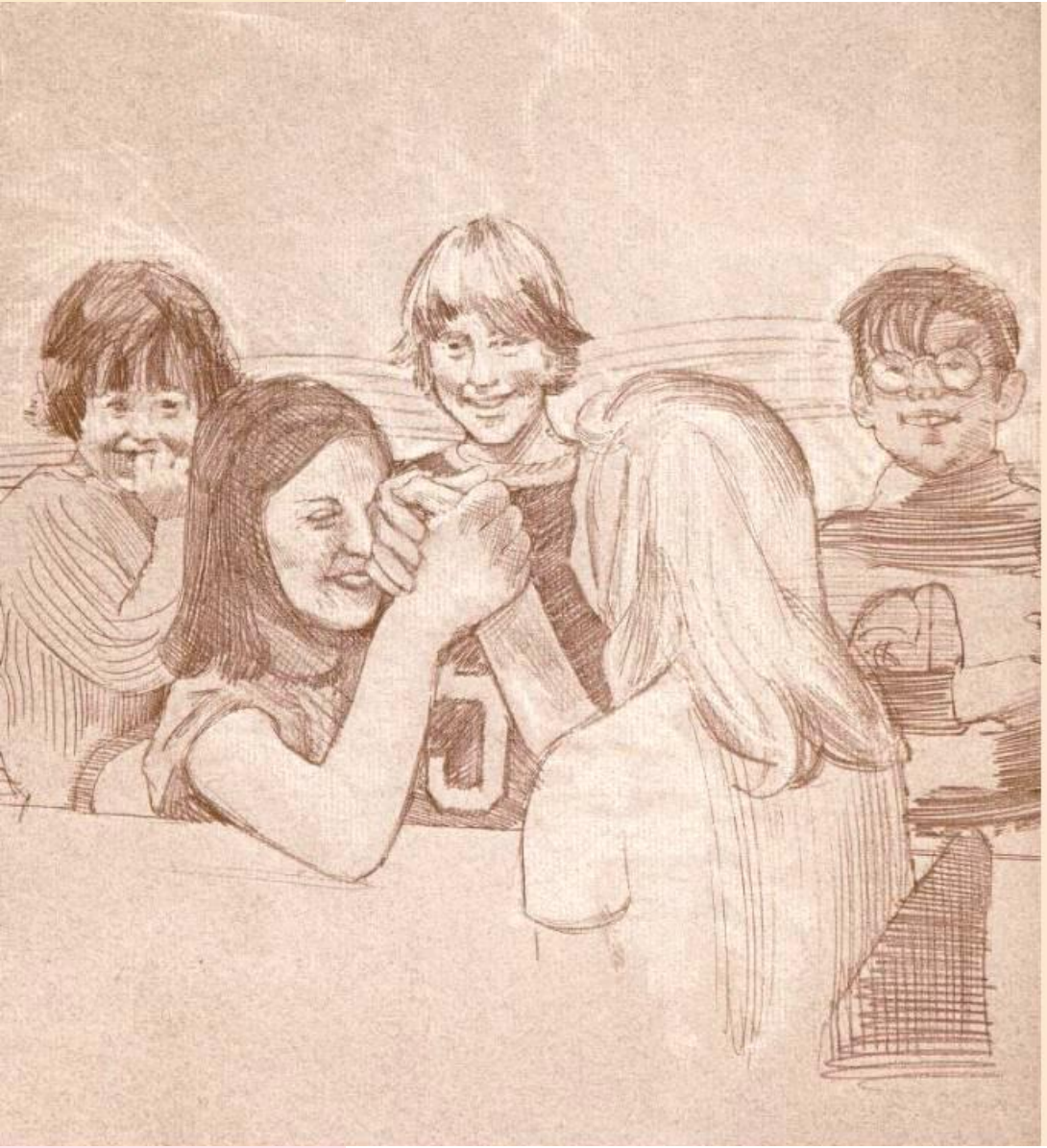

अगले दिन जब सब बच्चे अपनी-अपनी जगह बैठ गए मिसेज़ कॉख़र ने पूछा, "आज पंजा लड़ाने का मुकाबला कौन करना चाहेगा ?" कमरे में हरेक का हाथ फटाक से ऊपर उठा।

"बढ़िया! सूज़न और मेरी क्या तुम दोनों शुरुआत करना चाहोगे ?"

सूज़न और मेरी एक मेज़ पर आमने-सामने बैठीं। उन्होंने अपनी कोहनियाँ मेज़ पर टिका दीं और एक-दूसरे का पंजा कस कर पकड़ लिया।

"एक, दो, तीन, शुरु!" मिसेज़ कॉख़र ने कहा।

सूज़न ने आसानी से मेरी की बाज़ू झुका दी। मिसेज़ कॉखर मुस्कुराईं। "अगला," उन्होंने कहा।

हरेक बच्चे को पिछली बाज़ी जीतने वाले से पंजा लड़ाने का मौका मिला। रैन्डी अपना पहला मुकाबला आसानी से जीता। उसके बाद भी वह हरेक बार जीतता गया। सबकी बारी आ चुकी थी पर रैन्डी मेज़ पर बना हुआ था।

"अब तुम्हारी बारी है माइक, तुम कोशिश करना चाहोगे?" मिसेज़ कॉख़र ने पूछा।

"इसके साथ पंजा लड़ाना?" रैन्डी बोला, "अरे इसे मैं चोट-वोट लगा दूँगा।"

"आज़मा कर तो देखो," माइक ने ललकारा। वह कुछ घबराया हुआ था पर रैन्डी को देख हिम्मत से मुस्कुराया।

शुरु में तो ऐसा लगा मानो रैन्डी माइक को छूने से ही डर रहा हो। पर उन्होंने एक-दूसरे के पंजे थामे और कोहनियाँ मेज़ पर टिका दीं।

"एक, दो, तीन, शुरू!" मिसेज़ कॉखर ने कहा।

माइक ने पल भर में ही रैन्डी की बाज़ू मेज़ पर पटक दी। रैन्डी हक्का-बक्का रह गया।

"मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाना चाहता था," वह खिसिया कर बोला। "चलो फिर से करते हैं।"

दूसरी बार माइक को कुछ मुश्किल हुई, पर वह अंततः रैन्डी की बाज़ू फिर से मेज़ पर झुका सका। माइक के मन में एक गुदगुदी-सी हुई। पर वह कुछ डरा भी। उसके जीतने पर रैन्डी अगर नाराज़ हो गया तो ?

''असल में मुझे एक सुभीता है,'' माइक ने रैन्डी से कहा। ''अपनी पहिएदार-कुर्सी को चलाने की वजह से मेरी बाज़ुएं खूब मज़बूत हो चुकी हैं।''

''अच्छा,'' रैन्डी बोला। वह अपनी मेज़ पर लौटते समय कुछ नाख़ुश सा दिख रहा था।

''लगता है अपनी क्लास में पंजा लड़ाने का चैम्पियन माइक स्टीवन्स है,'' मिसेज़ कॉख़र ने ऐलान किया। ''अपन कल कुछ और करेंगे, कल चैकर्स का मुकाबला होगा। जिस किसीके पास चैकर्स का बोर्ड हो, वह कल उसे ज़रूर लेता आए।''

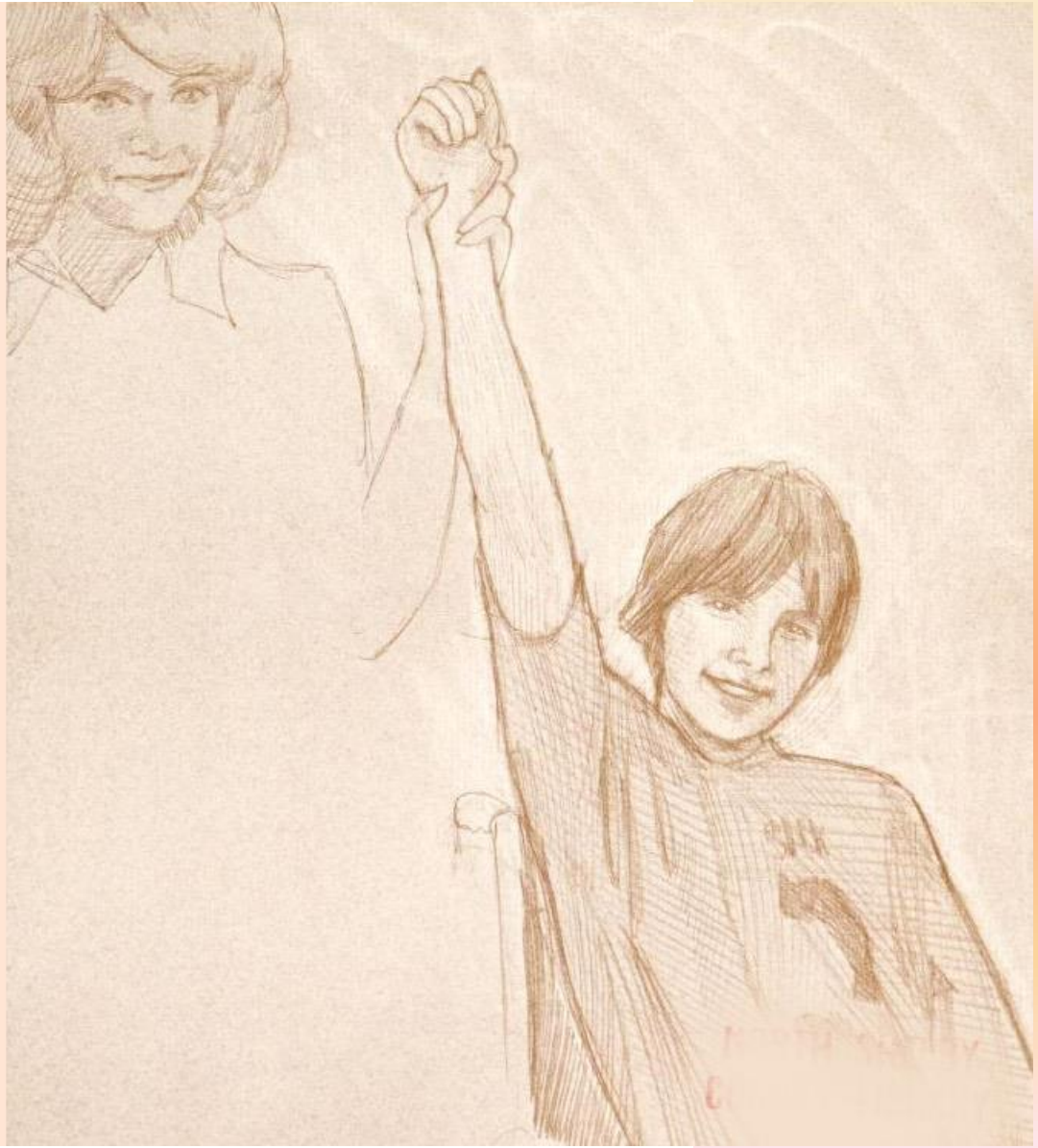

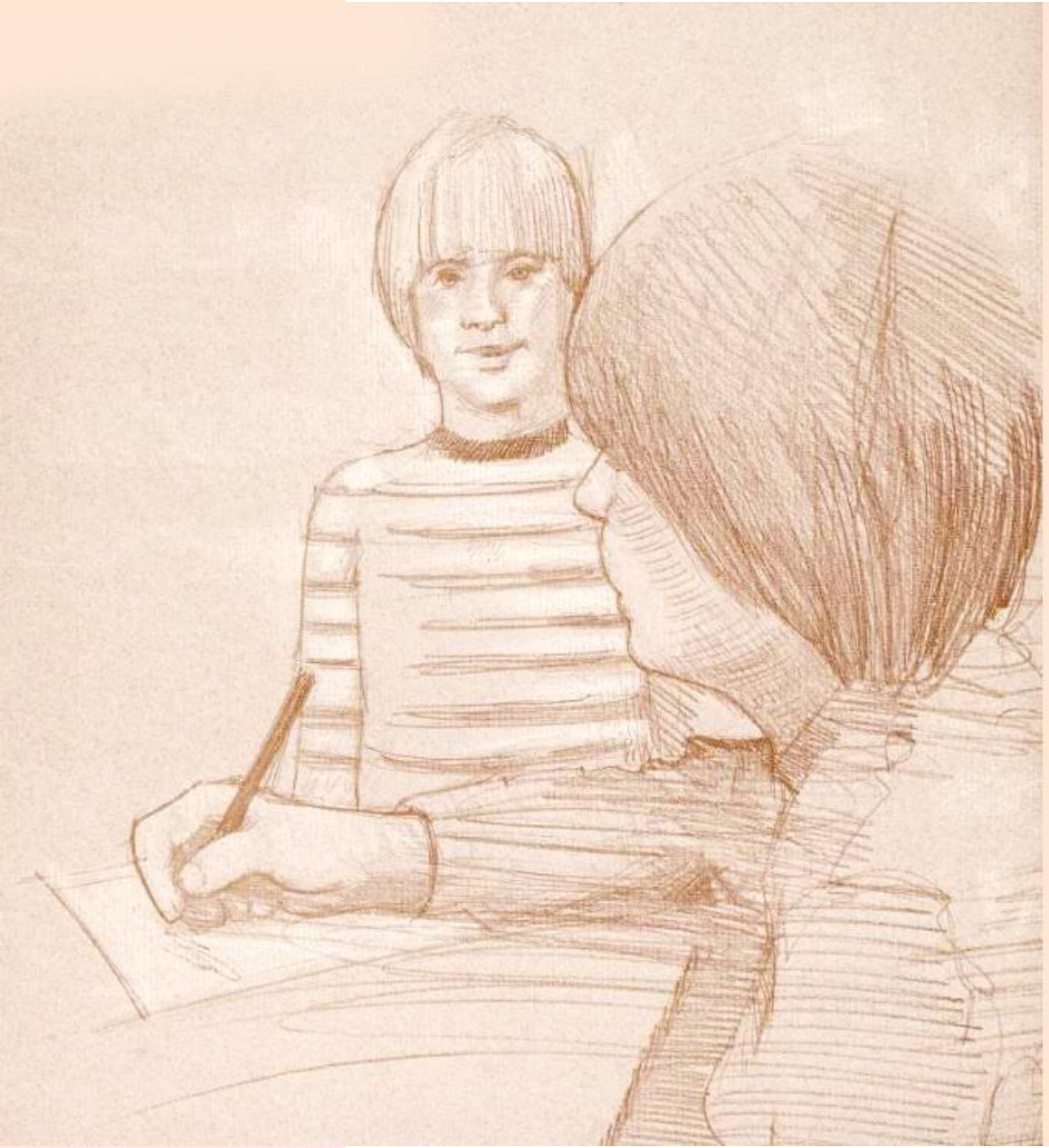

उस दिन स्कूल खत्म होने पर रैन्डी माइक की मेज़ के पास आया।

"तुम आए उसके पहले हमने कक्षा में इतने खेल कभी नहीं खेले थे," उसने कहा। "तो क्या तुम चैकर्स में भी उस्ताद हो"

"मैं ठीक-ठाक खेल लेता हूँ," माइक ने जवाब दिया। "मेरे पुराने स्कूल में हम रोज़ चैकर्स खेला करते थे। हम रोज़ तैरने भी जाते थे।"

"तुम तैर भी सकते हो?" रैन्डी हैरान था, फिर से।

"बेशक," माइक ने कहा। "दरअसल पानी मेरे शरीर को ऊपर उठाए रखता है और मैं हाथों से पानी धकेलता हूँ। मेरे हाथ काफ़ी मज़बूत हैं, याद है ना।"

"हाँ भई याद है। खैर तुम पंजा लड़ाने में जीते होगे, पर मैं अपनी बहन के साथ हर दिन चैकर्स खेलता हूँ। वह हाईस्कूल में है। पर जीतता मैं ही हूँ।" रैन्डी मुस्कुराया और अपने दोस्तों से मिलने चल दिया।

अगले दिन दोपहर का खाना खाते समय सूज़न माइक के पास आ बैठी। "क्या क्लास में लौटते समय तुम्हारी कुर्सी को धकेलने में मदद चाहिए ?" उसने माइक से जानना चाहा।

"शुक्रिया, पर मैं अपनी कुर्सी खुद धकेल सकता हूँ," माइक ने जवाब दिया। "पर तुम साथ चलोगी तो मुझे अच्छा लगेगा।"

"क्या तुम चैकर्स में भी जीत जाओगे?" सूज़न ने पूछा।

"कोशिश तो पूरी करूंगा," माइक ने कहा।

चैकर्स का मुकाबला दोपहर के खाने के तुरन्त बाद शुरू हुआ। माइक ने अपनी हर चाल सोच-समझ कर चली। कई मुकाबलों के बाद आख़िर में सिर्फ दो खिलाड़ी बचे थे, माइक और रैन्डी। जब वह बाज़ी भी खत्म हुई मिसेज़ कॉख़र ने विजेता का ऐलान किया।

"माइक स्टीवन्स हमारा चैकर्स का चैम्पियन है। हालांकि रैन्डी, तुमने उसका डट कर मुकाबला किया।" वे दोनों को देख मुस्कुराईं। रैन्डी के चेहरे पर भी मुस्कान थी।

"तुम और क्या-क्या कर सकते हो?" उसने माइक से पूछा।

"मैं पूल खेल सकता हूँ। पर मुझे खड़े होने में मदद चाहिए होती है। तब मैं अपनी कुर्सी के सामने पूल टेबल की टेक ले लेता हूँ। पर पता है मेरा संतुलन कभी गड़बड़ा भी जाता है। इसलिए किसीको मेरे पास हमेशा खड़े रहना होता है।"

"मैंने देखा है तुम्हें, हम लागों को खेलते देखते," रैन्डी बोला। "तुमने कभी बताया ही नहीं कि तुम खेलना चाहते थे।"

"क्योंकि मुझे डर था कि मेरे साथ कोई खेलना ही नहीं चाहेगा। और फिर मुझे संभालने मेरे पास कौन खड़ा रहेगा?" माइक ने कह डाला।

"मैं," रैन्डी का जवाब था।

उस दिन जब माइक और रैन्डी खेल कक्ष में घुसे, एक बच्चा चीखा, "यह कमरा पूल खिलाड़ियों के लिए है, एक अपाहिज खेल थोड़े ना सकता है।"

माइक रुक गया उसने नज़रें उठाईं। कमरे में मौजूद हरेक बच्चा उसे घूर रहा था। तब माइक ने ग़ौर किया कि रैन्डी मुस्का रहा था।

"आज़मा कर तो देखो," रैन्डी बोला। "एक बार भिड़ कर तो देखो।"

माइक अपने नए स्कूल में दूसरा साल शुरू करने वाला है। उसे अब स्कूल पहले से बेहतर लगता है। बेशक कुछ बच्चे उसे अब भी घूरेंगे। पर उतने नहीं जितने पहले घूरा करते थे। अब कुछ ऐसे सहपाठी हैं जिनसे वह मदद मांग सकता है। बच्चे यह जान गए हैं कि माइक उनसे इतना अलग भी नहीं है। वह सिर्फ पहिएदार-कुर्सी पर बैठा एक बच्चा नहीं है। वह माइक है।

माइक दस साल का है। वह पाँचवीं जमात में है। वह पहले एक ख़ास स्कूल में जाता था, जहाँ उसके दोस्त या तो बैसाखियों के साथ या पहिएदार कुर्सियों में होते थे। पर इस साल वह सार्वजनिक स्कूल में जाने वाला है। वह अच्छा तैराक है, उसे पूल खेलना पसन्द है। पर लोग उसे घूर कर देखें यह उसे सख़्त नापसन्द है। उसकी नई कक्षा के बच्चों ने सेरिब्रल पॉल्सी (मस्तिष्क-घात) वाले किसी बच्चे को पहले कभी देखा ही नहीं है। सो वे जब उसे घूरते हैं माइक को कतई अच्छा नहीं लगता।